॥ श्रीः ॥

विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

१०८

महाकविकालिदासप्रणीतम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

'प्रकाश'-संस्कृत-हिन्दी-आङ्ग्लव्याख्यात्रयोपेतम्

व्याख्याकार

डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री

एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत), स्वर्णपदक विजेता

पी-एच्० डी०, डी० लिट्०, डी० एस्सी०

साहित्याऽऽयुर्वेदरत्न, विद्याभास्कर, आयुर्वेदबृहस्पति

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

भूमिका

महाकवि कालिदास भारतीय मनीषा के परमोज्ज्वल प्रतीक रूप में संस्कृत साहित्य में प्रतिष्ठित हैं। विश्व साहित्य में उनकी कृतियों का तो महत्त्वपूर्ण स्थान है ही साथ ही विश्व के लोकप्रिय कवियों और नाटक कारों में भी उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रकृति की लीलाभूमि में जीवन बिताने वाले महाकवि ने अपने महाकाव्यों, ऋतुसंहार, मेघदूत जैसे लघुकाव्यों एवं अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय आदि नाटकों में जो अनुपम सौन्दर्य अनुस्यूत किया है, उसकी क्षमता संस्कृत साहित्य में ही नहीं विश्व के किसी भी साहित्य में दुर्लभ है। लोक-प्रियता की दृष्टि से कालिदास आज भी अद्वितीय ही ठहरते हैं। उनकी कृतियाँ विद्वानों तथा सामान्य शिक्षित जनों में समान रूप से प्रिय हैं। यदि कहा जाय कि संस्कृत साहित्य का अध्ययन कालिदास की कृतियों से ही होता है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। मूर्धन्य टीकाकार मल्लिनाथ ने कालिदास की रचनाओं के सम्बन्ध में जो प्रशस्ति लिखी है उससे उक्त कथन का समर्थन अनायास उपलब्ध हो जाता है। वे लिखते हैं—

वाणीं काणभुजीमजीगणदवाशासीच्च वैयासिकीम्
अन्तस्तन्त्रमरंस्त पन्नगगवीगुम्फेषु चाजागरीत्।
वाचामाकलयद्रहस्यमखिलं यश्चाक्षपादस्फुराम्
लोके भूद्यदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः॥

अर्थात् महर्षि कणाद का वैशेषिक दर्शन, भगवान् वेदव्यास का वेदान्त दर्शन, शेषावतार पतंजलि का महाभाष्य, अक्षपाद गौतम का न्यायदर्शन आदि शास्त्रीय ग्रन्थों का जिसने यथावत् अध्ययन कर लिया है वही कालिदास की रचनाओं का रसास्वादन कर सकता है। इस कथन से यह स्पष्टतः ध्वनि होता है कि कालिदास की सूक्तियों का सम्यग् रूप से आस्वादन करना केवल दिग्गज पण्डितों के ही वश ही बात है। संस्कृत काव्य-ग्रन्थों के टीकाकारों में मल्लिनाथ का मूर्धन्य स्थान है। संस्कृत के अनेक जटिल काव्यों पर यदि उनकी टीकाएँ उपलब्ध न होतीं तो वे आज इतने लोकप्रिय न होते। कालिदास की रचनाओं को दृष्टिगत रख कर स्वयं मल्लिनाथ ने अपने सम्बन्ध में कहा है—

कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशाः॥

अर्थात् कालिदास की रचनाओं का सार अद्यावधि मात्र तीन ही हृदयंगम कर पाये हैं—एक चतुरानन ब्रह्मा, दूसरी वाग्देवी सरस्वती तथा तीसरे स्वयं कालिदास। मेरे समान अल्पज्ञ जन तो उन्हें समझ पाने में सर्वथा असमर्थ ही रहे हैं।

मल्लिनाथ जैसे प्रकाण्ड विद्वान् जब कालिदास की रचनाओं के यथावत् रसास्वादन में स्वयं को अशक्त प्रतिपादित करते हों तब अन्य विद्वानों की क्षमता का अनुमान स्वयं ही लगाया जा सकता है। अतः निःसंकोच कहा जा सकता है कि कालिदास की रचनाएँ दिग्गज विद्वानों के मनन का विषय हैं। वे अत्यन्त सरस, सरल तथा सुबोध होते हुए भी परम गम्भीर एवं निगूढ भावों से गुम्फित हैं।

॥ श्रीः ॥

महाकविश्रीकालिदासप्रणीतम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

प्रथमोऽङ्कः

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रसन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥ १ ॥

अन्वयः—या तनुः स्रष्टुः आद्या सृष्टिः, या विधिहुतं हविः वहति, या च होत्री ये द्वे कालं विधत्तः, (या) श्रुतिविषयगुणा, या विश्वं व्याप्य स्थिता, यां सर्वबीजप्रकृतिः इति आहुः, यया प्राणिनः प्राणवन्तः ताभिः प्रत्यक्षाभिः अष्टाभिः तनुभिः (उपलक्षितः) प्रसन्नः ईशः वः अवतु ॥ १ ॥

या सृष्टिरिति। या तनुः=मूर्तिः, स्रष्टुः=जगन्निर्माणकर्तुः, आद्या सृष्टिः= प्राथमिकनिर्माणम् (जलरूपेत्यर्थः), या मूर्तिः, विधिना=वैदिकेन विधानेन, हुतं=देवतोद्देशेनाग्नौ हवनीकृतम्, हविः=हवनीयद्रव्यम्, वहति=देवान् प्रापयितुं धारयति प्रापयति (अग्निमयीति भावः), या च तनुः, होत्री=हवनकर्त्री (यजमानरूपेत्यर्थः), ये द्वे मूर्त्ती, कालम्=अहोरात्रस्य (तत्परकतिथेश्च) प्रवर्त्तनात् सौरं चान्द्रञ्च मासर्त्तुवर्षादिरूपं समयं, विधत्तः=निष्पादयतः (सूर्यचन्द्ररूपे इत्यर्थः), श्रुतेः= श्रवणस्य, विषयः=शब्दः, स एव गुणो यस्याः सा श्रुतिविषयगुणा=आकाशमयी, या मूर्त्तिः, विश्वं= सकलं जगत्, व्याप्य=आवृत्य, स्थिता=विद्यमानाऽस्ति (नभोरूपेत्यर्थः), यां मूर्तिम्, सर्वबीजा-

---

भगवान् शिव की वह जलमयी मूर्ति जो विधाता की प्रथम सृष्टि है, वह अग्निरूपा मूर्ति जो विधिवत् हवन की गई सामग्री को तत्-तद् देवताओं तक पहुँचाती है, वह मूर्ति जो होत्री अर्थात् यजमान रूप में वैदिक विधानों का सम्पादन करती है, वे दो मूर्तियाँ जो सूर्य-चन्द्र रूप में पक्ष, मास, ऋतु आदि के द्वारा काल का विधान करती हैं, वह मूर्ति जो कर्णेन्द्रिय के विषय शब्दों के आश्रय आकाश के रूप में सर्वत्र व्याप्त है, वह मूर्त्ति जिसे विद्वान् सम्पूर्ण बीजों का उत्पादक कारण अर्थात् पृथ्वीरूपा प्रतिपादित करते हैं तथा वह मूर्ति जिससे सम्पूर्ण

May Īśa (Lord Śiva) protect you. Īśa, who is possessed of those eight visible forms, (to wet, viz water) which is the first creation of the creator, (viz fire), which carries the oblation offered according to injunction, (viz the priest) which performs the religious rites or sacrifice, those two (viz. the Sun and the Moon) which regulate time (viz ether or sky) which having the attribute of